शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

वर्तमान में न्यू मीडिया का युवाओं व बच्चों पर प्रभाव

प्राप्तिः 05.09.2023
स्वीकृतः 17.09.2023

65

डॉ० अलका रानी
प्रोफेसर व संकायाध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग
मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी (हरिद्वार)
ईमेल : *dralkarani2016@gmail.com*

आरती भट्ट
सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र
मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी (हरिद्वार)
ईमेल : *aartibhatt372@gmail.com*

सारांश

प्रिन्ट मीडिया से सोशल मीडिया तक की यात्रा ने समाज के हर वर्ग पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव डाला है किंतु सबसे अधिक जो व्यक्ति प्रभावित होते हैं वो हैं युवा। युवा मन सदैव नवाचारों को आसानी से स्वीकार कर लेता है और तुरंत प्रतिक्रिया देता है। यह देखा गया है कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक युवाओं ने देश निर्माण और सामाजिक बदलाव में सबसे अधिक भाग लिया है। इस पूरे बदलाव पर मीडिया का प्रभाव भी रहा है। सोशल मीडिया ने रचनात्मकता को तो बढ़ा दिया, लेकिन हिंसक प्रवृत्तियां भी बढ़ी हैं। सोशल मीडिया के विकास ने भारतीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया है और इसके माध्यम से कितना बदलाव हुआ है? यह परिवर्तन समाज में अधिक प्रभावी है। सूचना प्रसारण और ग्रहणशीलता पर इसी सबसे अधिक असर पड़ा है। सूचना प्रसारण संसाधनों का विस्तार इसमें बदलाव का सबसे बड़ा कारण है। इसके परिणामस्वरूप, सूचना प्रौद्योगिकी ने इस बड़े समाज को छोटा करके एक केंद्र में स्थानांतरित कर दिया है। इन सबकों इस लेख के माध्यम से समझाने की एक कोशिश की गयी है, विशेषकर न्यू मीडिया या सोशल मीडिया के प्रभाव की।

भूमिका

युवा पीढ़ी किसी भी देश का सबसे बड़ा मानव संसाधन है जिसके माध्यम से देश के संकटों का आसानी से समाधान किया जा सकता है। यह पीढ़ी हर देश में बदलाव और विकास ला सकती है। विकासशील देशों में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे सामाजिक तथा आर्थिक विकास में एक अनुशासित, कर्तव्यनिष्ठ और समर्पित युवा शक्ति की जरूरत रखते हैं। भारतीय युवा हमारे देश का भविष्य और आशा का प्रतीक रहे हैं। संसाधन, सूचना और संचार के माध्यम से जानकारी देने और प्राप्त करने के साधनों का विकास और विस्तार एक समाज में होने वाले परिवर्तन का मुख्य कारण रहा है।

लारसन कहते हैं कि संचार प्रणाली में सुधार ने कई नए उपायों को जन्म दिया है, जिसमें प्रकाशन, संचार, मनोरंजन और विज्ञापन सबसे महत्वपूर्ण हैं। आज यह सूचना प्रभाव के मुख्य स्रोत

हैं जो मनुष्य के बाह्य वातावरण में क्षेत्रीय विकास को प्रेरित करता है। इसने मूल वार्ताओं के क्रम और भाषाओं को आदत का मानक बनाया है, साथ ही इसने नए क्षेत्र में आदान–प्रदान और अंतः क्रिया के विश्लेषण में भी सहायता की है। इससे सामाजिक स्तर और अधिकार बढ़े हैं और पुरानी परम्पराएं खत्म हो गई हैं। लेजरसफेल्ड और मर्टन ने कहा है कि जनसंचार आमजन पर नशीला प्रभाव डालता है। ऐसी स्थिति में पहुंचने के लिए समाज के लोग देखते, पढ़ते और सुनते हैं। राईट का मानना है कि किसी भी वस्तु के ज्यादा प्रयोग से अन्तःक्रिया सीमित हो जाती है, जो सामाजिक संबंधों को बाधित करता है। यह साधन इतना अधिक विकल्प देता है कि लक्ष्य और साधनों के बीच भ्रान्तियाँ पैदा होती हैं। नवीनता का प्रचार इतना अधिक होता है कि यह परम्पराओं को भूल जाता है और सपने दिखाता है। यह बात इससे सिद्ध हो जाती है कि 1929 में भारत में रेडियो से पाठ देना प्रारंभ हुआ। आकाशवाणी प्रसारण में शिक्षण नीतियाँ भी रही हैं। पूर्व में रेडियो और टेलीविजन प्रचार के सबसे नवीनतम माध्यम हैं। फिर इसका स्थान टेलीविजन ने लिया जिसने रेडियो की तुलना में इतना महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया है और इसे प्रचार का सबसे अच्छा साधन समझा जाता था।

आज भी मीडिया शब्द कहते या सुनते ही समाचार पत्र–पत्रिका, रेडियो और टेलीविजन जैसे सूचना संसाधन हमारे सामने आने लगते हैं। पुरातन काल में सूचना को भेजने या प्राप्त करने के लिए लोगों को स्वयं जाना पड़ता था या कबूतरों का सहारा लेना पड़ता था, जो अधिक समय लेता था। सूचना माध्यमों का विकास समय के साथ प्रारम्भ में धीरे–धीरे हुआ, लेकिन बाद में तेजी से हुआ। जिसमें सूचना को बड़े माध्यम के रूप में बहुत व्यापक तथा कम लागत वाले समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने स्थान लिया। आज विश्व भर में कम लागत मूल्य पर सूचना संसाधन उपलब्ध हैं, जिससे एक क्लिक में विश्व भर की आवश्यकतानुसार सभी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ये सब संभव हुआ न्यू मीडिया के कारण। अब मीडिया इतना विकसित हो गया है कि हम आसानी से बहुत कुछ जान सकते हैं। नवीन मीडिया, वेब–बेस्ड मीडिया या सोशल मीडिया, ने देशों की सीमाओं को तोड़ दिया है और विश्व को एक गाँव में बदल दिया है देश के हर नागरिक को संवाद का मंच मिल गया है और दुनिया भर की छोटी–छोटी सूचनाओं को हर व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकना संभव हो पाया है। इसने पुराने संचार माध्यमों को भी समय और आवश्यकता के और अधिक अनुकूल बना दिया है।

आजकल हर व्यक्ति मीडिया को हर दिन किसी न किसी रूप में मीडिया का उपयोग करता है। हांलाकि अभी भी समाचार पत्र–पत्रिका, रेडियो और टेलीविजन सबसे अधिक मीडिया का उपयोग प्रत्यक्ष रूप से करते हैं। वहीं, बहुत कम प्रतिशत वाले लोग इसका अप्रत्यक्ष उपयोग करते हैं। यह लोग मीडिया का प्रत्यक्ष उपयोग करने वालों से सूचना प्राप्त करते हैं। चयन की शैली सूचनाओं और संपर्क की प्रक्रिया के परिणामों पर निर्भर करती है। ये जानकारी लोगों को मीडिया से मिलती है। वहीं बच्चे, युवा, पुरुष, महिलाएं और बुजुर्ग हर दिन इसका उपयोग करते हैं, अपनी आवश्यकतानुसार।

जर्मनी के प्रसिद्ध समाजशास्त्री हर्बर्ट मारकोजे का कहना है कि मीडिया के प्रचार से उत्पन्न होने वाला उपभोग मनुष्यों में एक विशिष्ट प्रवृत्ति पैदा करता है और उसे पहले से अधिक समाज में प्रचलित हित साधने के वातावरण पर निर्भर करता है। मीडिया के प्रचार से उत्पन्न होने वाला उपभोग मनुष्यों में एक विशिष्ट प्रवृत्ति पैदा करता है और उसे पहले से अधिक समाज में प्रसिद्ध करता है।

सोशल मीडिया क्या है?

सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक ऐसा समूह है जो प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान–प्रदान की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते हैं, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते है (नरूका व शर्मा, 2018)। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्वपूर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है।

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे– फेसबुक, ट्विटर, लिंकर, यू–ट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस, साउंडक्लाउड और ऐसे ही अन्य साइटों पर प्रयोगकर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो और वीडियों रूपों में जानकारी में हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की योग्यता और सुविधा प्रदान करता है। पिछले दो दशकों में सोशल मीडिया की लोकप्रियता और विकास इतना बढ़ा है कि कई शोधकर्ता इन सामाजिक प्लेटफार्मों और उनके समुदायों पर उनके प्रभावों के बारे में अधिक जानना चाहते हैं। हाल ही में हुई प्रौद्योगिकी क्रांति ने लोगों को वैकल्पिक जीवनशैली की ओर आकर्शित किया है। आज समुदाय में लगभग हर किसी के पास कम से कम एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। यह भी सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शो को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को भी जन्म दिया है जो घात लगाए रहते है कि कब मौका मिले और वारदात कर दें। लगता है कि उनकी संख्या बढ़ रही है।

आधुनिक युग में सोशल मीडिया के प्रभाव का अवलोकन

मानव सदा से ही सामाजिक और जिज्ञासु था और आज भी है। वर्तमान समय में मनुष्य की इस उत्सुकता को शांत करने का सबसे अच्छा तरीका मीडिया ही है। देश में इलेक्ट्रॉनिकी के अविश्वसनीय विकास ने दूरदर्शन कार्यक्रमों में काफी सुधार और बदलाव लाया है। बाद में कम्प्यूटर के आगमन से दूरदर्शन और वीडियो कैसेट आदि बनाने में काफी बदलाव आया है। यूजीसी की उच्च शिक्षा परियोजना अगस्त 1984 में शुरू की गई थी जिसका उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा के प्रसार का लक्ष्य था। भारत के दूरदर्शन का भौगोलिक दायरा विश्व में सबसे बड़ा है। इनमें समाचार, योग, कला, संस्कृति, पर्यावरण और अन्य विशयों से जुड़े कार्यक्रम प्रसारण किए जाते हैं। वृत्तचित्र, लघु फीचर फिल्म, सीरियल, संगीत, नाटक आदि सामाजिक विषयों का प्रसारण करते हैं। लेकिन 21वीं सदी के आगमन से विशेषकर पिछले 10 वर्षों में इंटरनेट व वर्ल्ड वाइड वेब के आगमन ने मीडिया की परिभाषा ही बदल दी है।

युवा वर्ग इस प्रिंट, दृश्य और श्रृव्य अभिव्यक्ति से हमेशा प्रभावित रहा है चाहे बात 20वीं या 21वीं शताब्दी का हो। इसने हमेशा युवाओं को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाया है। इस प्रकार वहीं टेलीविजन, रेडियो और सिनेमा ने उन्हें आधुनिक जीवन जीने का सलीका भी सिखाया। वर्तमान में इसी संदर्भ में एक और श्रृंखला जुड़ गई है, वह है सोशल मीडिया। भारत में इसका लगभग 60 प्रतिशत युवा इस्तेमाल कर रहे हैं और इन युवाओं को जोड़ने का काम कर रहा है। इसका क्रेज हर दिन बढ़ता जा रहा है। जो आजकल युवा लोगों की दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन

गया है। जीवन इस महत्वपूर्ण भाग से बदल गया है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों में सोशल मीडिया के प्रयोक्ताओं की संख्या दिसंबर 2012 तक 6. 2 करोड पर पहुंच चुकी थी। शहरी भारत में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं। इस रिपोर्ट के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है –

- मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करते हुए सोशल नेटवर्किंग ऐक्सेस की औसत आवृति एक सप्ताह में सात दिन।
- फेसबुक को भारत में 97 प्रतिशत सोशल मीडिया प्रयोक्ताओं द्वारा ऐक्सेस किया जाता है।
- भारतीय सोशल मीडिया पर हर रोज औसत लगभग 30 मिनट व्यतीत करते है। इन प्रयोगकर्ताओं में अधिकतम युवा (84 प्रतिशत) और कॉलेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) है।

उपरोक्त सर्वे यह भी बताता है कि 35 प्रमुख शहरों के आंकड़ों के आधार पर 77 प्रतिशत लोग मोबाइल से सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। युवाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है, वे इंटरनेट से लेकर थ्री जी और फोर जी मोबाइल तक सोशल मीडिया के माध्यम से देश–दुनिया की सीमाओं को पार कर अपने सपनों को तेजी से पूरा कर रहे हैं। हांलाकि सोशल मीडिया का यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक हो सकता है।

एक अन्य सर्वे (शुक्ला, 2019) के अनुसार 73% भारतीय बच्चे सेल फोन उपयोगकर्ता हैं और हर साल गेमिंग और इंटरनेट के आदी बच्चों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 2017 में, भारत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की वृद्धि की वार्षिक दर लगभग 129% है, जो चीन (109% से भी अधिक है। यह भी देखा गया है कि 17 से 26 वर्ष के युवा और 4 से 16 वर्ष के बच्चे मीडिया का सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। प्रिंट मीडिया की शुरुआत हमारे देश में एक उद्देश्य से हुई थी। उनका लक्ष्य सामाजिक चेतना को बढ़ाना था। मीडिया इंसान की भाषायी अथवा कलात्मक अभिव्यक्ति और स्थानों तक पहुँचाने की प्रणाली को कहते हैं। पिछली कई सदियों से प्रिंट मीडिया ने इस मायने में बहुत कुछ किया है। प्रिंट मीडिया भी हमारी लिखित और दृश्य अभिव्यक्ति को संभव बना सकता है। मीडिया में यह और भी प्रभावी हुआ, श्रृव्य अभिव्यक्ति को पहले रेडियो के माध्यम से प्रसारित करना संभव था, लेकिन बाद में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपनी जगह बनाई। दोनों अभिव्यक्तियों को बाद में श्रृव्य दृश्य के रूप में टेलीविजन पर प्रसारण किया जा सकता था। यहां चलायमान दृश्य अभिव्यक्ति संभव थी, इसलिए यहां की दृश्य अभिव्यक्ति प्रिंटिंग मीडिया की अपेक्षा अधिक प्रभावी हुई। आजकल, औद्योगीकरण और नगरीकरण ने कई सामाजिक परिवर्तनों को जन्म दिया है। इससे कई नवीन मूल्यों का जन्म हुआ।

आज युवा लोगों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में सकारात्मक रूप से शामिल होने का प्रोत्साहन मिला है। शिक्षा और नौकरी के नए अवसरों को चुनने से लेकर उन्हें उपलब्ध कराने तक के अवसर दिए गए हैं। सोशल साइट्स पर जाकर अपनी उत्सुकता व्यक्त करके खोज पूरी कर लेता है। उसके सारे सवालों के जवाब सामने होते हैं। हाल ही में किसी सूचना को ध्यान में रखने और दूसरे को बताने के लिए लिखना पड़ता था, लेकिन आज बस एक पिक (पिक्चर) लेकर अपने फोन में रख लो और उसी तरह दूसरों को भी बताओ। यही नहीं, अब आप खुद से संबंधित दस्तावेज और सारी जिज्ञासा अपने मोबाइल फोन या मेल आईडी में सहज रूप से रख सकते हैं, ताकि आप उन्हें जरूरत पड़ने पर उपयोग कर सकें।

यही नहीं, युवा ब्लागिंग के माध्यम से अपनी समझ, ज्ञान, पिपासा, जिज्ञासा, भंडार और कौतुहल को बाहर निकाल रहे हैं, और सोशल मीडिया साइट्स के माध्यम से विश्व भर में अपने समान विचारधारा वाले लोगों को जोड़कर सामाजिक दायित्व के सरोकार को पूरा कर रहे हैं।

सोशल मीडिया के दुश्प्रभाव

युवाओं ने सोशल मीडिया पर घण्टों तक मित्रों के साथ चैट करना आदतों का एक नशा बना लिया है। सोशल मीडिया साइट्स पर अश्लील और भड़काऊ उत्तेजक संदेश भी प्रसारित किए जा रहे हैं। साथ ही हमारी स्वतंत्रता भी खत्म होती दिखती है। वर्तमान में युवाओं को व्यक्तिगत संवाद की एक बड़ी भाषायी समस्या भी देखने में आ रही है, जिससे वे सामाजिक रूप से सफल संवाद नहीं कर पा रहे हैं। साथ ही युवा लोग पश्चिमी संस्कृति को अपनाकर आधुनिक लगते हैं जिससे हमारे देश के युवा लोगों का जीवन चल रहा है। जिसमें वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, स्मोकिंग और शराब पीना, बोलचाल सब शामिल हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग करने वाले युवा लोगों में डिप्रेशन, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, बेचैनी और एकाग्रता में कमी जैसी कई समस्याएं भी बढ़ रही हैं। युवाओं व बच्चों पर सोशल मीडिया के प्रभाव को तालिका (सक्सेना, 2016 व अन्य पर आधारित) के माध्यम से भी समझा जा सकता है।

तालिका – युवाओं व बच्चों पर सोशल मीडिया का प्रभाव

युवाओं पर सकारात्मक प्रभाव	युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव	बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव	बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव
राष्ट्रीय एंव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता, समाज में जागरूकता, अभिव्यक्ति	नींद न आना, सामाजिक अलगाव, साइबर–धमकी या साइबरबुलिंग, फेसबुक डिप्रेशन यानी अवसाद, इंटरनेट की लत, आत्म–सम्मान कम होना, दैनिक गतिविधि में कमी, एकाग्रता (ध्यान) में कमी	टेलेन्ट, रियलिटी शो, शिक्षा से जुडे कार्यक्रम, जागरूकता	डिप्रेशन, झुंझलाहट, चिडचिडापन व मनोवैज्ञानिक समस्यायें

यदि बच्चों की बात की जाये तो यह सच है कि मीडिया बच्चों में सामाजिक चेतना बढ़ाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह बच्चों को प्रभावी प्रस्तुतियों के माध्यम से दिशा देता है और उन्हें स्वयं को संचालित करने के लिए भी प्रेरित करता है। इसके माध्यम से आज के बच्चे हमारी संस्कृति से इतने परिचित हैं कि वे भारत की हर बात जानने के लिए उत्सुक हैं। वे सिर्फ यहीं नहीं हैं वे पूरे विश्व को जानना चाहते हैं और जानते भी हैं। उनकी उत्सुकता हर विषय में बढ़ी है और वे सब कुछ जानना चाहते हैं। उनका नवीनतम उपयोग करके दुनिया भर में सफलता हासिल करना चाहते हैं। उन्हें अपने आप से बहुत प्रतिस्पर्धा है, दूसरों से नहीं। वे हर समय नवाचार चाहते हैं। वे तकनीक सीख रहे हैं। वर्तमान में बच्चों का टेलेन्ट मीडिया के माध्यम से विकसित हुआ है, जिसमें विभिन्न चैनलों पर प्रसारण होने वाले रियलिटी शो का सबसे बड़ा योगदान है। जिसने शहर और गाँव

दोनों में बच्चों का उत्साह दिखाया और बढ़ाया है। आज यह बच्चे मीडिया का उपयोग करते हैं, इसलिए वे किसी पर निर्भर नहीं हैं। इससे उन्हें आवश्यक सामग्री मिलती है। इन्हें कार्टून की दुनिया में ले जाकर बहुत मजा आता है। आज यह बच्चे समाज में होने वाली सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक गतिविधियों में भी बहुत दिलचस्पी लेते हैं। मीडिया ने इसे संभव बनाया है। लेकिन सोशल नेटवर्किंग साइटों पर बातचीत करते हुए लंबे समय तक समय बिताने के परिणामस्वरूप बच्चे कम आत्मनिर्भर हो जाते हैं और समर्थन के लिए अपने माता–पिता और परिवारों पर निर्भर रहते हैं।

सोशल मीडिया के फायदे तो बहुत हैं, पर इसने युवाओं को दिग्भ्रमित भी खूब किया है। इस पर धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले बयान नहीं आने चाहिए। अश्लील वीडियो पर पाबंदी होनी चाहिए और इस पर प्रभावी अंकुश के लिए कठोर कानून बनाकर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। एसोचैम की एक रिपोर्ट के अनुसार 6 से 17 साल की उम्र के बच्चे हर सप्ताह कम से कम 35 घण्टे टीवी देखते हैं। ज्यादा टीवी देखने से इन बच्चों का व्यवहार बदल जाता है। बच्चों का मन बदल रहा है। हिंसक प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। यह भी अध्ययन ने पाया कि दस साल से कम उम्र के चार प्रतिशत बच्चे अपने माता–पिता से मारपीट करने से भी नहीं डरते। बच्चों की बात नहीं मानी जाती तो वे अपने माता–पिता पर क्रोध करते हैं। दिल्ली साइक्रियेटिक सेन्टर के निदेशक एवं वरिष्ठ मनोचिकित्सक के अनुसार कि बच्चों, किशोरों और युवाओं में डिप्रेशन और कई अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याएं नेटवर्किंग साइट्स पर अधिक समय बिताने और टेलीविजन देखने से होती हैं। बच्चे टीवी पर शो देखने के बाद अपने रोल मॉडल को करते हुए करने की कोशिश करते हैं। वे इन कार्यक्रमों को वास्तविक जीवन में देखना पसंद करते हैं। इससे बच्चों में अकेले रहने की आदत भी बढ़ी है। आज बच्चे बाहर खेलने में उतनी दिलचस्प नहीं लेते जितने कि कंप्यूटर और मोबाइल पर खेले जाने वाले खेलों में लेते हैं। इससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है और साथ ही कई बीमारियां भी आ घेरती हैं। इसी कारण वर्तमान में बच्चे अपनी उम्र से पहले मैच्योर हो रहे हैं, चाहे वह शारीरिक तौर पर हों या मानसिक तौर पर हो। इनसे अपराध भी बढ रहे हैं।

उपसंहार

आज देश या समाज की प्रगति केवल समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो और इंटरनेट की मजबूत भूमिका और स्वतंत्रता से संभव है। राष्ट्रीय कार्य योजना के अनुसार, एक देश का विकास उसके भविष्य पर निर्भर करता है। शिक्षित बच्चा भविष्य में एक सक्रिय और बुद्धिमान नागरिक बन जाएगा। मीडिया ने हमेशा सामाजिक जागरुकता में योगदान दिया है। इसके माध्यम से छोटी से छोटी जानकारी से बड़ी जानकारी लोगों तक पहुचाई गई है। उसने सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रहित, लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करने और समाज में व्याप्त कुरीति और अंधविश्वास जैसे सामाजिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि, मीडिया में भी दो पहलू होते हैं, जैसे एक सिक्के में दो पहलू होते हैं। इसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष हैं।

भारत में युवा भारत का भविष्य और आषा था और हमेशा ही रहेगा। युवाओं को देश का बड़ा संसाधन मानते हैं। युवाओं को बुराई और सामाजिक समस्याओं के खिलाफ जागरुक बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है, और इसके अच्छे परिणाम भी हुए हैं। इसलिए यह महसूस किया जाता है कि युवाओं की शक्ति, गतिशीलता और आशाओं को रचनात्मक कार्यों और कार्यक्रमों में लगाया जाना चाहिए। स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय युवाओं ने कक्षाओं का बहिष्कार किया,

आन्दोलनों का आयोजन किया और विदेशी शासन का विरोध किया। इस भूमिका को नगरवासी पसंद करते थे। राष्ट्रीय नेताओं ने भी युवाओं को इस पुनरुद्धार में शामिल होने का आह्वान किया। पंरतु सोशल मीडिया के कारण आज का युवा बहक रहा है।

वहीं पिछले कुछ वर्षों में टीवी चैनलों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि वे अपनी टीआरपी को बढ़ाने के लिए हर तरह की खबरों को प्रसारित कर रहे हैं। कुछ लोगों को छोटी–छोटी बातों पर बैठाकर बहस कराया जाता है, जो समाज को अच्छा नहीं करता है। वहीं छोटी–छोटी खबरों को इतना बढ़िया बनाकर दिखाया जाता है कि सृजनात्मकता समाप्त हो जाती है। रही सही कसर सोशल मीडिया, यू–टयूब व फेसबुक ने पूरी कर दी है। लेकिन हमें ही इन सूचना माध्यमों से ही काम है पंरतु इनसे हमें क्या लेना चाहिए, यह सूचना माध्यम हमें क्या बताता है? ताकि हमारे आने वाले समाज निर्माता हमारे युवा और बच्चों को देश और समाज के हित में सही दिशा की ओर अग्रसर कर सकें और इन माध्यमों द्वारा सही सूचना प्राप्त कर अपना और देश का विकास कर सकें।

संदर्भ

1. नरूका, संतोष., शर्मा, विजय लक्ष्मी. (2018). सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियेटिव रिसर्च थॉटस.* 6(1). पृष्ठ **292–296.**
2. सक्सेना, रचना. (2016). वर्तमान में भारतीय युवाओं एवं बच्चों पर मीडिया का प्रभावः एक विवेचन. *शोध संचयन.* 7(1–2). पृष्ठ **75–79.**
3. शुक्ला, सरोज. (2019). जनमाध्यम, सोशल मीडिया और कंप्यूटर नवाचार का बच्चों पर प्रभाव. *जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कालरली रिसर्च इन एलाईड एजुकेशन.* 7(1–2). पृष्ठ **2217–2222.**
4. अनाम. (2020). Impact of Social Media on Youth. Rising Kashmir. E-paper dated 04 April 2022. http://risingkashmir.com/-impact-of-social-media-on-youth.
5. अनाम. (2023). सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव पर निबंध. https://tinyurl.com/4vpsy6wp.